Nos. 1-8 (1993-94 —— 2000-2001)

वार्षिक पत्रिका
1993-94

प्रवाहिनी

अंक 1

राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान
रुड़की-247 667

INSTITUTE OF HYDROLOGY
ROORKEE-247667 (U.P.)

वार्षिक पत्रिका

1993-94

11449
16/3/16

प्रवाहिनी

ROORKEE

NATIONAL INSTITUTE OF HYDROLOGY
राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान
आपो हि ष्ठा मयोभुवः

राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान

रुड़की-247 667

सम्पादक मण्डल

डा० दिव्या, वैज्ञानिक स
मनमोहन कुमार गोयल, वैज्ञानिक ब
मुहम्मद फ़ुरक़ानुल्लाह, वरिष्ठ तकनीकी सहायक

आवरण परिकल्पना

नरेन्द्र कुमार, प्रारूपकार
पंकज कुमार गर्ग, वरिष्ठ तकनीकी सहायक

रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं । सम्पादक मण्डल का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

डा० सौभाग्यमल सेठ
निदेशक

राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान
रुड़की

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान वर्ष 1993-94 से एक वार्षिक हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ कर रहा है।

हिन्दी दिवस पर इस पत्रिका के प्रथम संस्करण के प्रकाशन पर मैं राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान के समस्त सदस्यों को बधाई देता हूँ। मेरा विश्वास है कि यह पत्रिका संस्थान के सदस्यों की साहित्यिक प्रतिभा को उजागर करने एवं निखारने में एक सुदृढ़ माध्यम का काम करेगी, तथा हिन्दी भाषा के प्रचार एवं प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। मुझे आशा है कि मनोरंजन एवं सामान्य ज्ञान वर्धन के साथ-साथ यह पत्रिका जल विज्ञान के क्षेत्र में भी जानकारी बढ़ाने में सहायक होगी।

मैं इस प्रकाशन की सफलता की शुभकामना करता हूँ।

सौभाग्यमल

(सौभाग्यमल सेठ)

हिन्दी दिवस
14 सितम्बर, 1994

सम्पादकीय

नवीन रचनाओं रूपी बूंदों से मिलकर **प्रवाहिनी** अपने उद्‌गम स्थल से निकलकर आपके सम्मुख है । हमारे लिये अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे संस्थान का परिसर असंख्य प्रतिभाओं से भरा है, चाहे वह प्रतिभा जल विज्ञान के क्षेत्र में हो अथवा सांस्कृतिक गतिविधियों में; खेलकूद में हो अथवा साहित्य के क्षेत्र में; जलविज्ञान संस्थान को उसने नई गतिविधियां प्रदान की हैं, उसका रूप उसने सदैव सजाया और संवारा है, एक सुगंध इस परिसर में बिखेरी है जो मन को सदैव आल्हादित करती रही है। ऐसी ही कुछ प्रतिभाओं ने लेखन के क्षेत्र में भी अपना योगदान देने का संकल्प लिया है । उन्हीं का परिचय प्रदान करती हुई यह प्रवाहिनी प्रवाहित हो रही है।

हम उन सबके हार्दिक आभारी हैं, जिन्होंने अपने परिश्रम एवं प्रतिभा से प्रवाहिनी के उद्‌गम में अपना सहयोग दिया है। विश्वास है कि इसकी धारा आप सभी के सहयोग से प्रवाहित होती हुई न केवल जन-मानस को आप्यायित करती रहेगी वरन् चिन्तन-मनन का अवसर प्रदान कर नये दिशा निर्देश भी देती रहेगी ।

हम अपने निदेशक महोदय के भी आभारी हैं, जिनकी प्रेरणा एवं उत्साहवर्धन से ही इस पत्रिका का प्रकाशन सम्भव हो सका है। यह जैसी भी बन पड़ी है आपके हाथों में है। त्रुटियां तो सदैव क्षमा योग्य होती हैं, इसी के साथ बस.....।

सम्पादक मण्डल

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ संख्या
1.	रुड़की : उत्तर प्रदेश का गौरव - *पंकज कुमार गर्ग*	1
2.	ध्वनि प्रदूषण - *डा० दिव्या*	3
3.	जल का संदेश - *मुकेश कुमार शर्मा*	6
4.	मानवता के नाम पर - *तेजपाल सिंह*	7
5	भारतीय नदियां - एक अवलोकन - *मनोज कुमार*	9
6.	उपग्रह सुदूर संवेदन : इतिहास व प्रणाली - *देवेन्द्र सिंह राठौर*	10
7.	रिमोट कन्ट्रोल : कैसे कार्य करता है - *मनोज गोयल*	12
8.	देश को महान बनाना है - *अनिल कुमार लोहनी*	13
9.	संसाधन संरक्षण की सामान्य विवेचना की झांकी में जल संरक्षण की उपयोगीता एवं उपाय - *अशोक कुमार द्विवेदी एवं सुखदेव सिंह कंवर*	14
१०.	हिन्दी न जाने किस दुनिया में खो गई ! - *गुरदीप सिंह दुआ*	18
11.	भूकम्प क्यों आते हैं ? - *राजेश्वर मेहरोत्रा*	19
12.	सम्बन्ध - *अन्जू चौधरी*	23
13.	पुरा बाढ़ अध्ययन की आकल्पन में उपयोगिता - *सुरेन्द्र कुमार मिश्र*	24
14.	हिन्दी की प्रगति : समस्याएं एवं समाधान - *किरन आहुजा*	26

15. हिन्दी की प्रगति : समस्याएं एवं समाधान 29
- *चन्द्रशेखर*
16. हिन्दी की प्रगति : समस्याएं एवं समाधान 32
- *सुभाष किचलू*
17. भारतीय रेल की जनरल बोगी 35
- *मनमोहन कुमार गोयल*
18. पृथ्वी के गिर्द घूमते बिजली : भविष्य के ऊर्जा साधन 38
- *उमेश कुमार सिंह*
19. जरा सोचिये 40
- *मनोज कुमार 'सागर'*
20. पुस्तकालय कम्प्यूटरीकरण : इसकी आवश्यकताएं एवं भारत में वर्तमान स्थिति 42
- *मुहम्मद फ़ुरकानुल्लाह*
21. हाथी के दांत 45
- *राहुल कुमार जायसवाल*
22. बोधकथाएं 46
- *रामकुमार*
23. कुछ विश्व प्रसिद्ध संगठन 47
- *पंकज कुमार गर्ग*